page-(1)

शब्दालंकार

Dr. Anju
Hindi Dept

शब्दालंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है - शब्द + अलंकार । शब्द के दो रूप होते है - ध्वनि और अर्थ । ध्वनि के आधार पर शब्दालंकारों की सृष्टि होती है । जब अलंकार किसी विशेष शब्द की स्थिति मे रहे और उस शब्द की जगह पर कोई और पर्यायवाची शब्द के रख देने से उस शब्द का अस्तित्व न रहे उसे शब्दालंकार कहते है ।

अर्थात जिस अलंकार में शब्दों का प्रयोग करने से चमत्कार हो जाता है और उन शब्दों की जगह पर समानार्थी शब्द को रखने से वो चमत्कार समाप्त हो जाये वहा शब्दालंकार होता है ।

शब्दालंकार के भेद —

1. अनुप्रास अलंकार
2. यमक अलंकार
3. पुनरुक्ति अलंकार
4. विप्सा अलंकार
5. वक्रोक्ति अलंकार
6. श्लेष अलंकार

1. अनुप्रास अलंकार → अनुप्रास शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - अनु

Scanned with CamScanner

pg (2) यहाँ अनु का अर्थ है बार-बार और प्रास का अर्थ होता है - वर्ण। जब किसी वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो तब जो चमत्कार होता है, उसे अनुप्रास कहते हैं। जैसे - जन रंजन भंजन दनुज मनुज रूप स
बिस्व बदर इव धृत उदर जोवत सोवत सूप।

अनुप्रास के भेद

1. छेकानुप्रास अलंकार
2. वृत्यानुप्रास
3. लाटानुप्रास
4. अन्त्यानुप्रास
5. श्रुत्यानुप्रास

(1) छेकानुप्रास → जहाँ पर स्वरूप और क्रम से अनेक व्यंजनों की आवृत्ति एक बार हो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है।

जैसे - रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै
साँसै भरि आँसू भरि कहत दई दई ॥

(2) वृत्यानुप्रास अलंकार → जब एक व्यंजन की आवृत्ति अनेक बार हो वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार कहते हैं।

जैसे → चामर-सी, चंदन-सी, चंद सी

Scanned with CamScanner

page ③ चाँदनी चमेली चारु चंद सुघर है।

③ लाटानुप्रास अलंकार → जहाँ शब्द और वाक्यों की आवर्ती हो तथा प्रत्येक जगह पर अर्थ भी वही, पर अन्वय करने पर भिन्नता आ जाये वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है अर्थात जब एक शब्द या वाक्य खंड की आवर्ती उसी अर्थ में हो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है।

④ अन्त्यानुप्रास अलंकार → जहाँ अंत में तुक मिलती हो वहाँ पर अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है। जैसे - "लगा दी किसने आकर आग।
कहाँ था तू संशय का नाग?"

⑤ श्रुत्यानुप्रास अलंकार - जहाँ पर कानों को मधुर लगने वाले वर्णों की आवृत्ति हो उसे श्रुत्यानुप्रास अलंकार कहते हैं।

जैसे - दिनान्त था, थे दीननाथ डूबते
सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।

② यमक अलंकार → यमक शब्द का अर्थ होता है - दो। जब एक ही शब्द ज्यादा बार प्रयोग हो पर हर बार अर्थ अलग अलग आये वहाँ पर यमक अलंकार होता है।

Scanned with CamScanner

जैसे - कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
(प) या खाये बौराए नर, या पाये बौराये।

③ **पुनरुक्ति अलंकार** → पुनरुक्ति अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना है :- पुनः + उक्ति
जब कोई शब्द दो बार दोहराया जाता है वहाँ पर पुनरुक्ति अलंकार होता है।

④ **विप्सा अलंकार** → जब हर्ष, शोक, विस्मयादिबोधक आदि भावों को प्रभावशाली रूप से व्यक्त करने के लिए शब्दों की पुनरावृत्ति को ही विप्सा अलंकार कहते हैं।
जैसे - मोहि मोहि मोहन को मन भयो राधामय
राधा मन मोहि मोहि मोहन मयी मयी।।

⑤ **वक्रोक्ति अलंकार** → जहाँ पर वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का श्रोता अलग अर्थ निकाले उसे वक्रोक्ति अलंकार कहते हैं।

वक्रोक्ति अलंकार के भेद :-
1. काकु वक्रोक्ति
2. श्लेष वक्रोक्ति

Scanned with CamScanner

1. काकु वक्रोक्ति → जब वक्ता के द्वारा बोले गये शब्दों का उनकी कंठ ध्वनि के कारण श्रोता कुछ और अर्थ निकाले वहाँ पर काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है।

जैसे — मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू।

2. श्लेष वक्रोक्ति → जहाँ पर श्लेष की वजह से वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का अलग अर्थ निकाला जाये वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है।

जैसे — को तुम हो इत आये कहाँ
घनश्याम हो तो कितहु बरसो
चितचोर कहावत है हम तो जांहु जहाँ धन सरसो

Scanned with CamScanner